लॉक डाउन खुलने के बाद भी घरों में ही रहना चाहते है लोग

जितेंद्र जाखेटिया, शोधार्थी, देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इंदौर

lkjk{k

कोरोना महामारी से बचने के लिये देश में किये गए लॉक डाउन की सफलता का श्रेय लोगों को ही जाता है। लोगों की जागरूकता का ही परिणाम है कि कई चरणों में लागू किये गए इस लॉक डाउन के सार्थक परिणाम सामने आए है। कोरोन से बचने का सबसे सार्थक कदम ही लॉक डाउन को माना गया है। अमेरिका जैसे विश्व के समृद्ध देश जब इस महामारी से निपटने में नाकाम साबित हो रहे है। यहां अमेरिका के लोगों ने ही लॉक डाउन को नकार दिया, जिसका परिणाम हजारों मौतों के रूप में विश्व के सामने है। ऐसे में भारत में कोरोना महामारी की मार की बात करें तो यहां लॉक डाउन के कारण स्थिति को ज्यादा भयावह नहीं कहा जा सकता है। इसका पूरा श्रेय लोगों को ही जाता है, जिन्होंने पूरी ईमानदारी से सरकार के इस निर्णय पर अमल किया। इस शोध का उद्देश्य लॉक डाउन को खोलने के बाद लोगों की मानसिकता को जानना है।

ey 'kCn– कोरोना, लॉक डाउन, लोग, मानसिकता, प्रतिक्रिया, जागरूकता।

iLrkouk& किसी भी मिशन की सफलता में लोगों की जागरूकता और सकारात्मक सोच महत्वपूर्ण कारक होते है। यदि लोग का सकारात्मक भागीदारी नहीं है तो वह मिशन या योजना कभी सफल नहीं हो सकती है। आपात स्थिति में तो यह कथन और भी प्रासंगिक हो जाता है। महामारी के समय की बात करें या युद्ध के समय लगने वाले समर्थन या फिर नोटबंदी जैसी योजनाओं पर लोगों के समर्थन की, सभी परिस्थितियों में लोग महत्वपूर्ण कारक के रूप में उपस्थित है। ऐसी ही एक भयावह परिस्थिति कोराना महामारी को लेकर है। विश्व का कोई भी देश यह कहने की स्थिति में नहीं है कि कोरोना से इस तरह से निपटा जा सकता है। कोरोना के सामने सभी देश अपनी–अपनी तरह से लड़ाई लड़ रहे है, जिसमें लॉक डाउन सबसे बडे हथियार के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है। भारत में भी इसी रास्ते कोरोना से लड़ाई लड़ी जा रही है।

इस समय पूरा विश्व कोरोना वायरस के संक्रमण से लड़ रहा है। चीन के वुहान शहर से इस वायरस ने अपना फैलावा किया और आज विश्व के अधिकांश हिस्से में फैला हुआ है। वायरस का सबसे खतरनाक रूप यह है कि वह लोगों की जान ले रहा है। वास्तव में यह एक प्राकृतिक वायरस न होकर मानव निर्मित वायरस है, जिसे चीन द्वारा बनाए जाने को लेकर चर्चाएं जारी है। आज इसके कारण विश्व मं हाहाकार मचा हुआ है और किसी के पास इसका स्थायी इलाज नहीं है। व्यवस्था बंद कर घरों में रहना ही इसका अभी तक का सबसे कारगर उपाय माना जा रहा है। भारत भी इस वायरस के संक्रमण से अछुता नहीं है और हजारों लोग इसकी चपेट में है। भारत में भी इससे बचने के लिये चरणबद्ध तरीके से लॉक डाउन किया जा रहा है। भारत सरकार एक योजनाबद्ध तरीके से इससे निपटने पर काम कर रही है। हालॉकि लम्बे समय तक लॉक डाउन लागू रखना किसी भी दृष्टि से संभव नहीं है। ऐसे में लॉक डाउन में छुट देने पर हर स्तर पर विचार किया जा रहा है। सरकार को अंदेशा है कि लॉक डाउन में छुट के साथ ही लोग घरों से निकलेंगे और कोरोना का संक्रमण बढ़ेगा।

कोरोना संक्रमण को फैलने से रोकने के लिये देश में लागू किए गए लॉक डाउन के साथ ही देश के ज्यादा संक्रमित हो रहे शहरों में कफ्र्यू भी लागू किया गया है। देश के सबसे ज्यादा संक्रमित टॉप 15 शहरों में मध्यप्रदेश का इंदौर भी शामिल है। केंद्र सरकार ने कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए इन शहरों का चयन किया है। यह वही इंदौर शहर है, जो पिछले तीन सालों से देश का सबसे स्वच्छ शहर बन रहा है। क्रेंद्र सरकार के द्वारा स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के अंतर्गत स्मार्ट बनाए जा रहे शहरों की रैकिंग में भी इंदौर देश के टॉप शहर में आता है। कोरोना महामारी की बात करें तो भी इंदौर देश के टॉप शहरों में शामिल है और इसका प्रकोप लगातार बढ़ता ही जा रहा है। लॉक डाउन के बाद भी कोरोना अपने पैर पसार ही रहा है और कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। जिला प्रशासन लगातार सख्त कदम उठा रहा है। यहां तक की स्वास्थ विभाग घर–घर जाकर लोगों का सर्वे कर रहा है। इसे एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जा सकता है। तमाम प्रयासों के साथ ही शहर में सख्ती से कफ्र्यू लागू है, लेकिन कोरोना पर लगाम नहीं लग रही है। इंदौर, मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी है और लम्बे समय तक इसे पूरी तरह से बंद नहीं रखा जा सकता है। यदि ऐसा किया जाता है तो प्रदेश विकास में सालों पीछे चला जाएगा। इस स्थिति में लॉक डाउन को खोलने पर चिंतन हो रहा है। शासन, प्रशासन, सामजिक संगठनों, राजनेताओं, बुद्धिजीवियों और व्यावसायिक संगठनों के अपने–अपने तर्क है। इन सबके बीच एक महत्वपूर्ण कारक है लोग की सोच। यह सोच ही आने वाले दिनों में इस महामारी की गति तय करेगी।

इंदौर में भी लॉक डाउन खोलने की तैयार जिला प्रशासन कर रहा है। इस बीच हमने इंदौर की जनता से लॉक डाउन खोलने के मुद्दे पर राय जाननी चाही तो चौकाने वाले नतीजे सामने आए। हमने जानना चाहा कि लॉक डाउन खुलने के बाद आप क्या करेंगे तो नतीजे प्रशासन को राहत देने वाले सामने आए। 29 प्रतिशत लोगों का कहना था कि लॉक डाउन खुलने के बाद वे अपने धरों पर ही रहना पसंद करेंगे। इनका कहना है कि जब तक कोरोना पर नियंत्रण नहीं हो जाता या फिर इसका वैक्सीन नहीं लग जाता है, वे बाजार का रूख नहीं करेंगे। ये लोग यह भी सोचते है कि लॉक डाउन की तरह ही वे घरों से ही अपने काम को अंजाम देंगे। आवश्यक वस्तुए घर पर ही उपलब्ध हो रही है तो फिर बाजार जाने का क्या काम है? 5 हजार लोगों से सेंपल सर्वे करने के बाद यह निष्कर्ष सामने आया है। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला की विभाग प्रमुख डा. सोनाली नरगून्दे और प्रेस्टिज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड साइंस के पत्रकारिता विभाग के प्रमुख डा. राजू सी. जान के निर्देशन में यह शोध किया गया।

शोध में 22 प्रतिशत लोगों ने लॉकडाउन खुलने पर सबसे पहले पार्लर जाने की बात कही। इनका कहना है कि लॉकडाउन के कारण बाल नहीं कट पाए, जिसके कारण वे सहज महसून नहीं कर रहे है। महिलाएं सबसे पहले ब्यूटी पॉर्लर जाना चाहती है। इसके साथ ही 17 प्रतिशत लोग ऐसे है, जो अपने दोस्त या रिश्तेदार के यहां जाना चाहते है। सभी के अलग–अलग कारण है। कुछ लोगों के रिश्तेदार के यहां कोई बीमार होकर स्वस्थ हुआ और उसे देखने और मिलने की इच्छा है। किसी के परिवार में निधन हुआ है तो किसी को कोई अन्य परेशानी रही हो। 17 प्रतिशत ऐसे में लोग है, जो लॉकडाउन खुलने के बाद सबसे पहले रेस्टोरेंट जाना चाहते है। इन लोगों का मानना है कि घर में बैठे–बैठे बोर हो गए है और बाहर का खाना खाने को भी काफी समय हो गया है। 5 प्रतिशत ऐसे लोग है जो घर की आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी करना चाहते है। इस वर्ग का कहना है कि घर पर वो सारी वस्तुए नहीं मिल पा रही है, जिसकी आवश्यकता होती है। ऐसे में लॉकडाउन खुलने पर सबसे पहले आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी ही की जाएगी, ताकि आने वाले समय में परेशानी कम हो सके। 10 प्रतिशत लोग ऐसे है तो सबसे पहले

धर्मस्थल जाना चाहते है। ये वे लोग है जो रोज ही मंदिर जाते है और लॉकडाउन के कारण उनका नियम टूटा है।

निष्कर्ष

लॉक डाउन के कारण लोग भले ही कई दिनों से घरों में ही है, लेकिन इसके बाद भी एक बड़ा वर्ग कोरोना से लड़ने के लिये खुद को घर में ही सुरक्षित महसूस कर रहा है। सर्वे में इस तथ्य के सामने आने के बाद जिला प्रशासन यदि लॉकडाउन को यदि लम्बा भी लगाए रखता है तो एक बड़ा वर्ग इसमें उसके साथ है।

सन्दर्भ

– डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.एनडीटीवी.काम.

– डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.दैनिक भास्कर.काम.

– डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.पत्रिका.काम.